ही था। और उसने मनुष्य को अपने स्वरूप और समानता मे बनाया। उसने खुद अधिकार किया। अब वह चाहता था कि हम भी अधिकार का जीवन बिताए।

परमेश्वर ने अधिकार को जो कुछ कहा वैसा हि हो गया। यीशु मसीह ने भी जब तुफान से कहा तुफान रूक गया। लाजर को पुकारा वह जिन्दा हो गया। मित्रो वह परमेश्वर वही अधिकार आपको देना चाहता है। उसने हमे अधिकार के जीवन के लिए रखा है। उसने हर विश्वासीयो को सांपो और बिच्छुओ को रोंदने का अधिकार दिया है।

लूकारचित सुसमाचार और उसके 9 अध्याय और 1 और 2 पद मे हम पाते कि यीशु मसीह ने अपने 12 चेलो को बुलाया और उन्हे लोगो को स्वस्थ करने का, दुष्टात्माओंको निकालने का अधिकार दिया है। मित्रो अधिकार केवल मालिक को या उसके बेटे को होता है, नोकर को नही। परमेश्वर हमे बेटा कहता है, नोकर नही। वह हमे राजकुमार कहता है। मै यु कहना चाहुंगा कि हम राजा है और वह राजाओं का राजा है। वह हमे गले से लगाता है। याद नही जब उडाव पुत्र अपने पिता के पास लोटकर आया तब उसके पिता ने उसको गले से लगाया था। लूका 15:20 और उनका अधिकार लोटाया। वह बाद मे नोकर नही कहलाया। वास्तव मे उडाव पुत्र ने नोकर रहने की ही इच्छा रखी थी। परन्तु वह नोकर नही बेटा कहलाया। मित्रो वह प्रभु हमे नोकर नही बनाता परन्तु हमे बेटा बनाता है और हमारा खोया हुआ अधिकरा वापस लोटाता है।

परमेश्वर ने मूसा को फिरोन से लडने के लिए क्या दिया। लाठी दी। लाठी यह अधिकार का प्रतिक है। हिन्दी मे एक कहावत है जिसकी लाठी उसी की भैस। दोस्तो जब हमारे पास अधिकार है तब शैतान हमारे वश मे ही रहेगा। बाद मे आगे चलकर मूसा ने सारे चमत्कार इसी लाठी से करे। जब कलिसीया मे विश्वासीयो के जीवन मे अधिकार होगा तो हम चमत्कारो को देखते है। गवाहीयो को सुनते है। यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद जो कार्य और जो चमत्कार यीशु मसीह ने किए थे लोगो ने वही कार्य और चमत्कार चेलो को करते हुए देखा। कैसे अधिकार से। परमेश्वर ने आपको और मुझे अधिकार दिया है, हमे उसका इस्तेमाल करना है। यह अधिकार तीनो आकाश, जल और पृथ्वी तीनो पर दिया था। प्रभु ने हमे जो अधिकार दिया है यदि हम उसकी गम्भीरता को समझ ले तो प्रभु के अद्भुत कार्य को देख पाएंगे।

Upper Room Prayer
Everday at 1:00 - 2:00 p.m.

Bible College
Every Friday 7:00 - 8:00 p.m

Bible School
Every Friday 8:00 - 9:00p.m

If you have any Prayer Request please contact on the foll No:
9850833779,9922269504

DISCIPLESHIP TRAINING CENTRE

Acts Foundation, Potter's House Church ,3rd Lane, Madhuban, Sangvi Pune- 27 Ph.9850833779 ;contact@actsministry.in

बाइबल स्कुल /Bible School

अंक:5 *Course-3* *Aug 2009* मुल्य:10 रू.

.....पिछले अंक का शेष भाग

छइवा दिन

प्राणी और मनुष्य

(उत्पत्ति 6:24–31)

"फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक–एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात घरेलू पशु और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति–जाति के अनुसार उत्पन्न हो और वैसा ही हो गया।" (उत्पत्ति 1:24)

परमेश्वर ने आकाश को बनाकर ज्योति पुन्ज और बाद मे पक्षियों से भर दिया, फिर उसने भुमि और जल को अलगकर जल को जल जीवित प्राणियों से भर दिया। अब छठवे दिन परमेश्वर ने भुचर प्राणि बनाए जिनमे हम तीन प्रकार पाते है।

1. घरेलु पशु
2. रेंगनेवाले जन्तु
3. वनपशु

ये तीन प्रकार के भुचर प्राणि की निर्मिती हम पाते है, जो हर एक की जाति–जाति के अनुसार उत्पन्न हुए। फिर जब परमेश्वरने इनको बनाया और जब देखा अच्छा है तब वह आगे दुसरे काम के लिए आगे बढा। हम परमेश्वर के एक महत्वपूर्ण गुण और क्रिया को इन 6 दिनों की गतिविधियों में लगातार पाते है। वह यह कि परमेश्वर जो कुछ काम हाथ मे लेता, और जब तक उसे पुरा करके यह भरोसा नही कर लेता कि वह अच्छा है या नही वह आगे नही बढता। और दुसरा काम हाथ मे नही लेता। ठीक उसी प्रकार से जब हम परमेश्वर के किसी कार्य को या, उससे जुडे कार्य को जब हम हाथ मे लेते है, और जब तक उसे पुरा करके यह भरोसा नही कर लेते कि वह अच्छा है कि नही हमे आगे नही बढना चाहिए।

मै अकसर हमारी सेवकाई के कार्यालय (Office) मे जो लोग काम कर रहे है उनसे कहता हुँ कि जब तक एक काम पुरा करके आप यह भरोसा नही कर लेते कि वह अच्छा है या नही हमे आगे नही बढना चहिए। यहां एक और बात मै जोडना चाहता हु कि परमेश्वर जब कुछ बनाता तो यह नही देखतस कि वह ठिक है कि नही। परन्तु वह यह देखता कि वह अच्छा है या नही। परमेश्वर अपने बच्चो को हमेशा अच्छी ही आशीष देता है। भजन 105 :5 मे दाउद कहता है कि

"वह तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थो से तृप्त करता है"।

लूका 11:11–12 " तुम मे से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी मॉगे, तो उसे पत्थर दे, या मछली मॉगे, तो मछली के बदले उसे सॉप दे? या अण्डा मॉगे तो उसे बिच्छू दे?

यहॉ यीशु यह भी सीखाना चाहता है कि पिता पुत्र को अच्छी ही आशीष देता है ठिक – ठाक नही।

"फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता मे बनाए" (उत्पत्ति 1:26)

परमेश्वर ने प्राणियों को बनाया। कई बार हम कहते है कि कुछ प्राणि वाकई मे बुध्दीमान होते है, कुछ संवेदनशील होते है। प्राणियो मे भी भावनाए होती है। उनमे भी महसुस करने कि ताकत होती है। उन्हे भी खुशी होती है, भुख, प्यास प्राणियो मे भी होती है। लेकिन फिर भी मैं आपसे यह कहना चाहता हुँ कि फिर भी परमेश्वर ने उन्हे मनुष्य से कम ही बनाया है। मनुष्य को उसने प्राणियो से उपर का दर्जा दिया है। क्योकि परमेश्वर ने प्राणियो को अपने स्वरूप मे और अपनी समानता मे नही बनाया। अब तक परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था वह सब कुछ अच्छा था। पांचवे दिन भी उसने जल–जन्तु और आकाश के पक्षी बनाए परन्तु जब मनुष्य के निर्माण करने का वक्त आया तो परमेश्वर ने कहा, कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप मे अपनी समानता मे बनाए। हम बिल्कुल परमेश्वर के जैसे है। परमेश्वर ने हमको जानवर मे जैसे नही बल्कि स्वंय उसके जैसा बनाया सचमुच कितना अद्भुत दर्जा आपको और मुझे उसने दिया है। प्रभु यीशु मसीह की स्तुती होवे। आगे चलकर सांतवा दिन मे मैं इसका विश्लेषण करूंगा।

"फिर परमेश्वर ने कहा हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता मे बनाए और वे समुद्र की मछलियो, और आकाश के पक्षियो और घरेलु पशुओ, और सारी पृथ्वी पर , और सब रेंगनेवाले जन्तुओ पर जो पृथ्वी पर रेंगते है अधिकार रखे।"

(उत्पत्ति 1:26)

यहां पर इस पद मे एक विशिष्ट बात मै आपको सीखाना चाहता हुं, लिखा है हम मनुष्य को रेखांकित हम पर गौर फरमाए। परमेश्वर ने कहा इस शब्द का उच्चारण इस वचन के पहले भी आया (पढिए उत्पत्ति 1: 3,6,9,11,14,20) लेकिन वहा हम शब्द का इस्तेमाल नही देखते है। हम यह शब्द बहुवचन है मतलब एक से अधिक। बाइबल मे आगे कई बार परमेश्वर के साथ इस प्रकार बहुवचनीय शब्दो का इस्तेमाल हुआ उनमे से कुछ का संदर्भ पढिए उत्पत्ति 1: 26, 3:22, 11:7,यशयाह 6:8। इस हम मे परमेश्वर का क्या तात्पर्य रहा होगा, क्यो यहां हम इस बहुवचनीय शब्द का इस्तेमाल पाते है। मैं इसका उत्तर आपको देना चाहता हुँ। हमारा परमेश्वर यह त्रैक्य परमेश्वर है। जिसे हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के भिन्न–भिन्न नाम से जानते है। परन्तु वास्तव में वह एक हि है। इनकी उपस्थिती हम उत्पत्ति के पहले अध्याय के पहले दो पदो से ही पाते है। अधिक जानकारी के लिए पाठयक्रम 2 का अंक 6 पढिए जिसमे मैने त्रैक्य परमेश्वर की जानकारी लिखी है।

अब सवाल यह उठता है उपर लिखित वचनो के अनुसार 6 बार परमेश्वर ने कहा इस शब्द का इस्तेमाल हुआ परन्तु हम शब्द का इस्तेमाल केवल मनुष्य की निर्मिती के वक्त ही हुआ।पशु–पक्षी और जल–जन्तु बनाते वक्त भी परमेश्वर अपने तीनो स्वरूप का उल्लेख नही करता। परन्तु केवल मनुष्य को बनाते वक्त मात्र वह हम मतलब तीनों स्वरूप का जो अस्तित्व मे है उसे दर्शा रहा है।उसने कहा आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता मे बनाए। यहां पर एक बहुत बडा भेद हम बाकि निर्मिती और मनुष्य के बीच पाते है। परमेश्वर अपने तीनो स्वरूप मे मनुष्य को ढालना चाहता था। ना केवल रूप, या शरीर परन्तु अपनी ही पवित्रता की आत्मा के अनुसार, उसने मनुष्य को सृजा ना केवल शरीर परन्तु उसने अपनी आत्मा की श्वास फुंकी (उत्पत्ति 2:7) यहां पर हम पाते है कि कितना अधिक महत्व उसने मनुष्य को दिया। कितना महत्वपूर्ण है कि हम अब प्रभु की आत्मा के अनुसार चले, बर्ताव करे, बातचीत करे इत्यादि, ना कि अपनी दैहिक या स्वाभाविक आत्मा के द्वारा चले। यह बात हमको समझनी होगी कि परमेश्वर की पवित्र आत्मा को हम नाराज न करे।

दुसरी यह बात हमे पता चलती है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप मे अपनी ही समानता मे बनाया, मतलब हमारा जो रूप है परमेश्वर का भी वह रूप है। हमारा जैसा चेहरा है वैसे ही परमेश्वर का भी चेहरा है। उसका भी हमारे जैसा शरीर है। चलिए मै आपको बाइबल मे से ही यह साबित कराउ कि परमेश्वर का शरीर है। और इसलिए उसने हमे उसके जैसे बनाया है। निर्गमन 33: 17–23 मे हम पढते है कि मूसा ने प्रभु से यह इच्छा रखी कि प्रभु मै तेरा तेज देखना चाहता हुँ। मुझे अपना तेज दिखा। आइए इस क्रिया मे मै आपको परमेश्वर के शरीर के कुछ हिस्से क्रम से दिखाउ।

- प्रभु ने कहा तेरे सम्मुख चलते हुए – प्रभु के पाव निर्ग 33:19
- फिर उसने कहा तु मेरे मुख का दर्शन नही कर सकता – प्रभु का मुख निर्गमन 33:20
- तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपे रहुंगा – प्रभु का हाथ निर्ग 33:2
- तब तु मेरी पीठ का तो दर्शन – प्रभु की पीठ निर्ग 33:23

उपरलिखित वचन मे हम परमेश्वर के शरीर के कुछ हिस्से देखते है। यही बात हम त्रैक्य परमेश्वर के दुसरे भाग पुत्र मे भी देखते है। वैसे भी हम जानते है कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को भेज दिया (यूहन्ना 3:16) वैसे भी यीशु मानवीय रूप और शरीर लेकर ही इस संसार मे आए थे। अधीक जानकारी के लिए मेरा आनेवाला पाठयक्रम 2 का 14 वा अंक जरूर पढे जिसमे यीशु के मानवीय चेहरे कि तस्वीर की झलक दिखाने की कोशीश मैने कि है।

इस प्रकार से हम यु कह सकते है कि परमेश्वर ने हमे अपने स्वरूप मे मतलब पिता और पुत्र के स्वरूप मे और अपनी पवित्र आत्मा की श्वास फुंक कर बनाया।
गलतियों 5:22–23 मे हम आत्मा के फल को देखते है। और 1 कुरिन्थियो 12:8–10 मे पवित्र आत्मा के दान के बारे मे हम पढते है। मतलब यदि हम पिता और पुत्र के रूप के अनुसार बनाए गए है तो वही हमे आत्मा के फल और दान से भी नवाजा गया है। यदि हम आत्मा के अनुसार चले और शाररीक स्वभाव से नही चले तो हम वह सब कर सकते है जो इन दोनो संदर्भो मे लिखा है। और जो खुद परमेश्वर ने और यीशु मसीह ने किया वह आप और मै भी कर सकते है। क्योंकि आगे यही लिखा है
" और वे समुद्र की मछलियो, आकाश के पक्षियो और घरेलु पशुओ पर और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओ पर जो पृथ्वी पर रेंगते है अधिकार रखे"।

क्या यह गुण परमेश्वर ने मनुष्य को दिया। अधिकार यह गुण कहां से आया। कौन था आकाश और पृथ्वी का अधिकारी? किसकी मर्जी से सबकुछ हो रहा था। मित्रो वह और कोई नही खुद परमेश्वर – पिता और पुत्र –